SHODH SAMAGAM

ISSN : 2581-6918 (Online), 2582-1792 (PRINT)

विकसित भारत @ २०४७ में साहित्य का योगदान

डॉली पांडेय, पी–एचडी, वाणिज्य विभाग
अग्रसेन महाविद्यालय, पुरानी बस्ती, रायपुर, छत्तीसगढ़, भारत

ORIGINAL ARTICLE

Author
डॉली पांडेय, पी–एचडी
E-mail : drdollypandey15@gmail.com

shodhsamagam1@gmail.com

Received on : 03/11/2025
Revised on : 04/01/2026
Accepted on : 13/01/2026
Overall Similarity : 04% on 05/01/2026

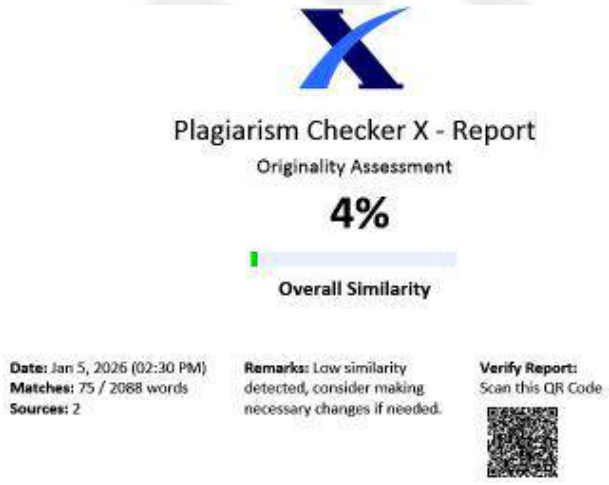

शोध सार

भारत सरकार द्वारा प्रस्तुत "विकसित भारत @2047" का लक्ष्य भारत को स्वतंत्रता के 100 वर्षों के अवसर पर एक पूर्ण विकसित राष्ट्र के रूप में स्थापित करना है। यह लक्ष्य केवल आर्थिक समृद्धि तक सीमित नहीं है, बल्कि इसमें सामाजिक न्याय, सांस्कृतिक संरक्षण, नैतिक मूल्यों का विकास, शिक्षा की गुणवत्ता तथा राष्ट्रीय चेतना का विस्तार भी सम्मिलित है। इस समग्र विकास में साहित्य की भूमिका अत्यंत महत्वपूर्ण है क्योंकि साहित्य समाज की चेतना, विचारधारा और मूल्यबोध का संवाहक होता है। प्रस्तुत शोध–पत्र में विकसित भारत की अवधारणा के संदर्भ में साहित्य के ऐतिहासिक, सामाजिक, सांस्कृतिक, शैक्षिक, नैतिक तथा वैश्विक योगदान का विस्तृत विश्लेषण किया गया है। अध्ययन से यह स्पष्ट होता है कि 2047 तक भारत को एक सशक्त, आत्मनिर्भर, समावेशी और मूल्यनिष्ठ राष्ट्र बनाने में साहित्य एक आधारभूत वैचारिक शक्ति के रूप में कार्य करेगा। इसके साथ ही, "समावेशी भारत" का लक्ष्य प्राप्त करने के लिए साहित्य सामाजिक न्याय के एक सशक्त स्वर के रूप में उभरता है। विकास की वास्तविक सफलता तभी है जब उसकी किरण समाज के अंतिम पायदान पर खड़े व्यक्ति तक पहुँचे। साहित्य ने सदैव ही हाशिए के समाज, दलित चेतना, स्त्री विमर्श और जनजातीय पहचान को मुख्यधारा में स्थान दिलाया है। यह समाज की उन विसंगतियों को निरंतर उजागर करता है जो तीव्र आर्थिक प्रगति की चकाचौंध में अक्सर अनदेखी रह जाती हैं। विकसित भारत के लक्ष्य को प्राप्त करने के लिए साहित्य समाज को निरंतर आत्म–मंथन के लिए प्रेरित करेगा, जिससे एक ऐसा सामंजस्यपूर्ण राष्ट्र निर्मित हो सके जहाँ समृद्धि के साथ–साथ समरसता और समानता भी सुनिश्चित हो।

मुख्य शब्द

विकसित भारत @2047, साहित्य, राष्ट्र.

भूमिका

भारत विश्व की प्राचीनतम सभ्यताओं में से एक है, जिसकी पहचान उसकी समृद्ध सांस्कृतिक विरासत, दार्शनिक चिंतन और साहित्यिक परंपरा से होती है। साहित्य ने सदैव भारतीय समाज को सोचने की दिशा दी है और समय–समय पर सामाजिक, धार्मिक तथा राजनीतिक परिवर्तनों को प्रभावित किया है। स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद भारत ने अनेक क्षेत्रों में उल्लेखनीय प्रगति की है, किंतु अभी भी पूर्ण विकसित राष्ट्र बनने की दिशा में अनेक चुनौतियाँ विद्यमान हैं। ''विकसित भारत@2047'' का संकल्प इन चुनौतियों का समाधान करते हुए भारत को वैश्विक नेतृत्व की ओर ले जाने का प्रयास है। इस लक्ष्य की प्राप्ति में साहित्य की भूमिका इसलिए भी महत्वपूर्ण हो जाती है क्योंकि कोई भी राष्ट्र केवल भौतिक संसाधनों से नहीं, बल्कि अपने नागरिकों की चेतना, सोच और नैतिक मूल्यों से विकसित होता है। भारत की भाषाई विविधता और क्षेत्रीय संस्कृतियाँ हमारी सबसे बड़ी ताकत हैं। ''विकसित भारत@2047'' का मार्ग इन्हीं विविधताओं के बीच समन्वय से होकर गुजरता है। साहित्य इन विभिन्न भाषाओं के बीच एक सेतु का निर्माण करता है, जिससे ''एक भारत–श्रेष्ठ भारत'' की परिकल्पना को बल मिलता है। जब हम अपनी भाषाओं के साहित्य को पढ़ते और समझते हैं, तो राष्ट्रीय एकता की भावना स्वतः ही सुदृढ़ होती है। अतः, इस शोध–पत्र की भूमिका का विस्तार इस सत्य को रेखांकित करता है कि राष्ट्र का वास्तविक विकास उसकी लाइब्रेरी (ज्ञान) और लैब (विज्ञान) के संतुलन में निहित है। साहित्य वह प्राणवायु है जो विकास के ढाँचे में राष्ट्रीयता और मानवता का रंग भरती है।

विकसित भारत–2047: अवधारणा और उद्देश्य

विकसित भारत–2047 की अवधारणा बहुआयामी विकास पर आधारित है। इसके प्रमुख उद्देश्य हैं:

1. आर्थिक रूप से आत्मनिर्भर भारत का निर्माण।
2. सामाजिक समानता और न्याय की स्थापना।
3. गुणवत्तापूर्ण शिक्षा और स्वास्थ्य सुविधाएँ।
4. तकनीकी और वैज्ञानिक उन्नति।
5. सांस्कृतिक पहचान और नैतिक मूल्यों का संरक्षण।

इन उद्देश्यों की सफलता के लिए केवल नीतियाँ और योजनाएँ पर्याप्त नहीं हैं। समाज में वैचारिक जागरूकता, नैतिक प्रतिबद्धता और राष्ट्रीय भावना का विकास आवश्यक है, जिसे साहित्य प्रभावी रूप से संपन्न करता है। शिक्षा और स्वास्थ्य जैसे बुनियादी उद्देश्यों में भी साहित्य एक गहरा मानवीय आयाम जोड़ता है। गुणवत्तापूर्ण शिक्षा का अर्थ केवल तकनीकी ज्ञान नहीं, बल्कि 'चरित्र निर्माण' भी है। साहित्य छात्रों को तार्किक बनाने के साथ–साथ नैतिक रूप से भी सुदृढ़ करता है। इसी प्रकार, तकनीकी और वैज्ञानिक उन्नति के युग में साहित्य हमें याद दिलाता है कि विज्ञान का उद्देश्य मानवता का कल्याण होना चाहिए, न कि विनाश। ''विकसित भारत@2047'' का यह संकल्प तभी पूर्ण होगा जब हमारी वैज्ञानिक प्रगति और सांस्कृतिक पहचान के बीच एक संतुलित तालमेल हो। साहित्य हमारी सांस्कृतिक जड़ों को सींचकर हमें वैश्विक नागरिक बनाने के साथ–साथ अपनी जड़ों से जोड़े रखने का गुरुतर कार्य करता है। अतः, साहित्य इन सभी उद्देश्यों के बीच एक 'सूत्रधार' की तरह है, जो नीतियों के शुष्क ढ़ांचे में राष्ट्रीय भावना और नैतिकता का प्राण फूँकता है।

भारतीय साहित्य की ऐतिहासिक पृष्ठभूमि और योगदान

भारतीय साहित्य का इतिहास अत्यंत प्राचीन और गौरवशाली है:

- प्राचीन काल में वेद, उपनिषद, ब्राह्मण ग्रंथ और महाकाव्य मानव जीवन के नैतिक और आध्यात्मिक पक्ष को स्पष्ट करते हैं।
- मध्यकाल में भक्ति आंदोलन के कवियों ने जाति, वर्ग और संप्रदाय की सीमाओं को तोड़ते हुए मानवता और प्रेम का संदेश दिया।
- आधुनिक काल में भारतेंदु युग, द्विवेदी युग, छायावाद और प्रगतिवाद ने राष्ट्रीय चेतना, सामाजिक सुधार और स्वतंत्रता संग्राम को वैचारिक आधार प्रदान किया।

इस ऐतिहासिक यात्रा से यह सिद्ध होता है कि साहित्य समाज के परिवर्तन का सशक्त माध्यम रहा है।

सामाजिक चेतना और सुधार में साहित्य की भूमिका

साहित्य समाज की समस्याओं को उजागर कर समाधान की दिशा सुझाता है। बाल–विवाह, दहेज, जातिवाद, स्त्री शोषण और आर्थिक असमानता जैसे विषय साहित्य के केंद्र में रहे हैं। कहानी, उपन्यास और नाटक समाज को आत्ममंथन के लिए प्रेरित करते हैं। विकसित भारत के लिए आवश्यक है कि समाज संवेदनशील, समानतामूलक और न्यायप्रिय हो, जिसमें साहित्य की भूमिका निर्णायक है। विकसित भारत के लिए केवल आर्थिक प्रगति पर्याप्त नहीं है, बल्कि नागरिकों में संवेदनशीलता का होना अनिवार्य है। साहित्य हमें दूसरों के दुखों, संघर्षों और अभावों से जोड़ता है। फणीश्वरनाथ 'रेणु' का आंचलिक साहित्य हो या शरतचंद्र के उपन्यास, ये हमें समाज के सबसे निचले तबके के प्रति सहानुभूति रखना सिखाते हैं।

राष्ट्रीय एकता और राष्ट्रवाद में साहित्य का योगदान

भारतीय स्वतंत्रता आंदोलन में साहित्य ने महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। देशभक्ति काव्य, नाटक और लेखों ने जनमानस में स्वतंत्रता की भावना जागृत की। आज भी विकसित भारत के निर्माण के लिए राष्ट्रीय एकता और अखंडता अत्यंत आवश्यक है। साहित्य विविध भाषाओं और संस्कृतियों के बीच सेतु का कार्य करता है और राष्ट्रवादी चेतना को सुदृढ़ करता है। साहित्य ने राष्ट्र को केवल एक भूखंड नहीं, बल्कि एक 'जीवंत इकाई' या 'माता' के रूप में प्रतिष्ठित किया। बंकिमचंद्र चटर्जी के उपन्यास 'आनंदमठ' से निकला 'वंदे मातरम' गीत पूरे देश का मंत्र बन गया। इसने बंगाल से लेकर पंजाब तक के लोगों को एक ही लक्ष्य के लिए एकजुट कर दिया।

सांस्कृतिक संरक्षण और भारतीय मूल्य

वैश्वीकरण के प्रभाव से सांस्कृतिक पहचान के समक्ष संकट उत्पन्न हो रहा है। साहित्य भारतीय परंपराओं, लोक–संस्कृति और जीवन–मूल्यों को संरक्षित करता है रामायण, महाभारत, लोककथाएँ और आधुनिक साहित्य भारतीय जीवन–दर्शन को अगली पीढ़ी तक पहुँचाते हैं। विकसित भारत की संकल्पना तभी सफल होगी जब सांस्कृतिक जड़ों को सुरक्षित रखा जाएगा। विकसित भारत की संकल्पना केवल बुनियादी ढांचे या आर्थिक समृद्धि तक सीमित नहीं हो सकती; इसकी वास्तविक सफलता हमारी सांस्कृतिक जड़ों की मजबूती में निहित है। साहित्य युवा पीढ़ी को अपने गौरवशाली अतीत से जोड़ता है और उन्हें यह समझने में मदद करता है कि 'भारतीयता' का वास्तविक अर्थ क्या है। यह नई पीढ़ी के भीतर अपनी भाषा, वेशभूषा और लोक–कलाओं के प्रति हीनभावना को समाप्त कर आत्मगौरव का भाव जगाता है। जब एक समाज अपनी जड़ों से कट जाता है, तो वह दिशाहीन हो जाता है; ऐसे में साहित्य एक मार्गदर्शक के रूप में हमें अपनी पहचान की ओर वापस लाता है। अतः, "वसुधैव कुटुम्बकम्" और "सर्वे भवन्तु सुखिनः" जैसे उदात्त भारतीय मूल्यों को आधुनिक संदर्भ में पुर्नपरिभाषित करने और उन्हें भविष्य की पीढ़ियों तक हस्तांतरित करने में साहित्य की भूमिका निर्णायक और अपरिहार्य है।

शिक्षा, नैतिकता और बौद्धिक विकास में साहित्य

साहित्य शिक्षा को मानवीय दृष्टिकोण प्रदान करता है। यह छात्रों में आलोचनात्मक सोच, रचनात्मकता, सहानुभूति और नैतिक विवेक का विकास करता है। 2047 तक भारत को ज्ञान–आधारित समाज बनाने के लिए साहित्यिक शिक्षा का विशेष महत्व है। वर्तमान शिक्षा प्रणाली में जहाँ तकनीकी और व्यावसायिक कौशल पर अधिक बल दिया जा रहा है, वहाँ साहित्य छात्रों के भीतर श्करुणाश और 'नैतिक विवेक' को जीवित रखने का कार्य करता है। यह एक ऐसा माध्यम है जो विद्यार्थियों को केवल जीविकोपार्जन के योग्य ही नहीं बनाता, बल्कि उन्हें एक संवेदनशील और न्यायप्रिय नागरिक के रूप में भी गढ़ता है। जब एक छात्र महान लेखकों की रचनाओं के संपर्क में आता है, तो उसमें जटिल सामाजिक परिस्थितियों को समझने की 'आलोचनात्मक सोच' विकसित होती है, जो उसे सतही सूचनाओं और गहन सत्य के बीच अंतर करना सिखाती है। साहित्य मनुष्य को अपनी जड़ों से जोड़कर रखता है और उसमें आत्म–मंथन की प्रवृत्ति जागृत करता है, जिससे समाज में बढ़ रही संवेदनशून्यता और अनैतिकता पर अंकुश लगाया जा सके। अंततः, साहित्य वह सेतु है जो ज्ञान को व्यवहार से और बुद्धि को हृदय से जोड़कर एक संतुलित व्यक्तित्व का निर्माण करता है।

डिजिटल युग, वैश्वीकरण और साहित्य

डिजिटल माध्यमों ने साहित्य के प्रसार को नई गति दी है। ई–पुस्तकें, ऑनलाइन पत्रिकाएँ और सोशल मीडिया साहित्य को जनसामान्य तक पहुँचा रहे हैं। वैश्विक मंच पर भारतीय साहित्य भारत की सांस्कृतिक पहचान को सशक्त करता है और ''वसुधैव कुटुम्बकम्'' की भावना को आगे बढ़ाता है। गीतांजलि श्री जैसी लेखिकाओं को मिलने वाले अंतरराष्ट्रीय सम्मान इस बात के प्रमाण हैं कि भारतीय संवेदनाओं और स्थानीय परिवेश की कहानियाँ अब विश्व स्तर पर सराही जा रही हैं। डिजिटल माध्यमों ने अनुवाद की बाधाओं को कम कर दिया है, जिससे हिंदी और अन्य क्षेत्रीय भाषाओं का साहित्य ''वसुधैव कुटुम्बकम्'' की भावना के साथ विश्व के कोने–कोने तक पहुँच रहा है। हालाँकि, इस प्रगति के साथ–साथ डिजिटल भटकाव और भाषाई मिलावट जैसी चुनौतियाँ भी सामने आई हैं, परंतु साहित्य की अंतर्निहित शक्ति इसे तकनीक के साथ तालमेल बिठाने में सक्षम बनाती है। विकसित भारत के निर्माण की दिशा में यह डिजिटल विस्तार न केवल हमारी सांस्कृतिक धरोहर को सुरक्षित रख रहा है, बल्कि विश्व भर के पाठकों को भारतीय जीवन दर्शन और नैतिक मूल्यों से भी जोड़ रहा है।

विकसित भारत के संदर्भ में साहित्य की चुनौतियाँ

वर्तमान समय में साहित्य के समक्ष कई चुनौतियाँ हैं, पठन संस्कृति में कमी, व्यावसायीकरण, भाषाई असंतुलन और युवाओं की घटती रुचि। इन चुनौतियों के समाधान के लिए शिक्षा प्रणाली, डिजिटल प्लेटफॉर्म और सरकारी प्रयासों में साहित्य को उचित स्थान देना आवश्यक है। भारत सरकार द्वारा ''उल्लास लिटरेसी वीक 2025'' जैसी पहलें न केवल साक्षरता, बल्कि डिजिटल और वित्तीय साक्षरता के साथ–साथ ''पठन संस्कृति'' को भी बढ़ावा दे रही हैं। ''विकसित भारत'' के विजन में साहित्य को विज्ञान और तकनीक के साथ जोड़कर (जैसे विज्ञानिका महोत्सव) पेश किया जा रहा है, ताकि एक संतुलित राष्ट्रीय चरित्र का निर्माण हो सके।

निष्कर्ष

विकसित भारत@2047 का लक्ष्य केवल आर्थिक और तकनीकी विकास से पूर्ण नहीं हो सकता। इसके लिए एक नैतिक, जागरूक, संवेदनशील और सांस्कृतिक रूप से समृद्ध समाज की आवश्यकता है। साहित्य समाज को विचार, मूल्य और दिशा प्रदान करता है। अतः यह कहा जा सकता है कि विकसित भारत के निर्माण में साहित्य की भूमिका आधारभूत, दीर्घकालिक और अपरिहार्य है। अतः साहित्य की यह भूमिका आधारभूत इसलिए है क्योंकि यह किसी भी परिवर्तन की शुरुआत मनुष्य के मस्तिष्क और हृदय से करती है। जब तक समाज का वैचारिक धरातल समानता, न्याय और बंधुत्व के मूल्यों से सिंचित नहीं होगा, तब तक कोई भी तकनीकी विकास समावेशी नहीं हो सकता। 2047 के भारत में साहित्य का योगदान एक ऐसी चेतना को जन्म देने में होगा जहाँ हर नागरिक 'स्व' से

ऊपर उठकर 'सर्व' के कल्याण की सोचेगा। यह केवल शब्दों का संसार नहीं, बल्कि एक ऐसा दर्पण होगा जिसमें विकसित भारत अपनी कमियों को देख सके और सुधार सके, तथा एक ऐसी मशाल होगा जो भविष्य की चुनौतियों के बीच सत्य और अहिंसा का मार्ग प्रशस्त करे। निष्कर्षतः, साहित्य और समाज का यह अटूट संबंध ही वह धुरी है, जिस पर एक आत्मनिर्भर, सशक्त और मूल्यनिष्ठ भारत का गौरवशाली भविष्य टिका हुआ है।

संदर्भ सूची

1. आचार्य, रामचंद्र शुक्ल (२०१६) *हिंदी साहित्य का इतिहास.* नागरी प्रचारिणी सभा, वाराणसी।
2. मिश्र, रामविलास (२०२०) *साहित्य और समाज.* राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली।
3. पांडेय, मैनेजर (२०१८) *साहित्य के सामाजिक सरोकार.* वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली।
4. द्विवेदी, हजारी प्रसाद (२०१७) *भारतीय साहित्य की भूमिका.* लोकभारती प्रकाशन, नई दिल्ली।
5. सिंह, नामवर (२०१६) *आधुनिकता और साहित्य.* राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली।
6. तिवारी, भोलानाथ (२०२१) *हिंदी साहित्य और राष्ट्रीय चेतना.* साहित्य भवन, प्रयागराज।
7. वर्मा, निर्मल (२०१८) *संस्कृति, साहित्य और राष्ट्र.* भारतीय ज्ञानपीठ, नई दिल्ली।
8. शर्मा, शिवकुमार (२०२२) विकसित भारत की संकल्पना में साहित्य की भूमिका. *हिंदी शोध पत्रिका,* १४(२), ४५–५२।
9. भारत सरकार (२०२३) *विकसित भारत–२०४७: दृष्टि दस्तावेज.* सूचना एवं प्रसारण मंत्रालय, नई दिल्ली।
10. त्रिपाठी, अर्चना (२०२१) साहित्य और राष्ट्र निर्माण. *समकालीन भारतीय साहित्य,* ६(१), ६०–६७।

****